देवभाषा

लौकिक संस्कृत :→ उपनिषद् काल समाप्त होते-होते वैदिक संस्कृत रूढ़ हो गई और भाषा अपने नए रूप में आई। वैदिक संस्कृत के विकसित, परिवर्तित एवं परवर्ती रूप को ही लौकिक संस्कृत संस्कृत या यदा-कदा देवभाषा भी कहते हैं। संस्कृत का आदिग्रन्थ 'बाल्मीकि रामायण' ईसा से लगभग 500 वर्ष पूर्व का है। महान व्याकरणाचार्य पाणिनि का समय भी 500 ई० पू० के आस-पास पड़ता है। पाणिनि ने अपनी रचना 'अष्टाध्यायी' लिखकर लौकिक संस्कृत को स्थिर रूप प्रदान किया। उन्होंने वैदिक संस्कृत की विसंगतियों को व्याकरण के नियमित साँचे में ढाला जिससे शब्दरूपों, धातुरूपों, प्रत्ययों की विविधता कम हो गई और काल, पुरुष, लिंग, वचन आदि के स्वच्छन्द रूप में किए गए परिवर्तन समाप्त हो गए। पाणिनि के जीवन काल में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। तभी तो उन्होंने वैदिक संस्कृत को छान्दस (वेदों की छन्दोबद्ध काव्य भाषा) और देववाणी तथा लौकिक संस्कृत को भाषा कहा। लौकिक संस्कृत का साहित्य समृद्ध एवं वैविध्यपूर्ण है, दर्शन, धर्म, व्याकरण, कोष, काव्यशास्त्र और ललित साहित्य की दृष्टि से लौकिक संस्कृत अत्यन्त समृद्ध है। रामायण और महाभारत जैसी श्रेष्ठ कृतियाँ इसी भाषा में हैं। विश्वप्रसिद्ध महान साहित्यकार, महाकवि कालिदास और महान गद्यकार बाणभट्ट इसी भाषा से सम्बन्धित हैं। वैदिक संस्कृत की अपेक्षा यह भाषा सरल, स्पष्ट और स्थिर है। लौकिक संस्कृत की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं→

1. वैदिक संस्कृत में 52 ध्वनियाँ थी, संस्कृत में वे घटकर 48 रह गईं। ळ, ळ्ह और ऋ, लृ आदि ध्वनियाँ समाप्त हो गईं। केवल 'कल्पना करना' के अर्थ में 'क्लृप' धातु में ही लृ शेष रह गया।
2. वैदिक संस्कृत के चार संयुक्त स्वर ए, ऐ, ओ, औ में से 'ए' तथा 'ओ' लौकिक संस्कृत के मूल स्वर हो गए और 'ऐ' तथा 'औ' का उच्चरित रूप 'अइ' अउ हो गया।
3. वैदिक संस्कृत की भाँति लौकिक संस्कृत भी श्लिष्ट योगात्मक भाषा है। दोनों में प्रायः सभी शब्द धातुज हैं। दोनों में पद रचना की पद्धति तथा प्रत्यय समान हैं।

Scanned with CamScanner

1) वैदिक संस्कृत में शब्द रूपों तथा धातु रूपों में वैकल्पिक रूपों का प्रचलन था अर्थात् एक रूप के स्थान पर दो-दो रूप प्रचलित थे, यह वैकल्पिक सुविधा लौकिक संस्कृत में समाप्त हो गई।

2) वैदिक संस्कृत की भाँति लौकिक संस्कृत में भी तीन लिंग और तीन वचन थे।

6) वैदिक संस्कृत में सन्धि नियम ऐच्छिक थे। कहीं सन्धि की जाती थी कहीं नहीं। लौकिक संस्कृत में सन्धि नियम अनिवार्य कर दिए गए।

7) वैदिक संस्कृत में प्रचलित लेट् लकार को लौकिक संस्कृत में समाप्त कर दिया गया।

(8) वैदिक संस्कृत में ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत स्वर प्रचलित थे, संस्कृत में प्लुत समाप्त हो गया।

(9) वैदिक संस्कृत के संगीतात्मक स्वर प्रयोग का स्थान लौकिक संस्कृत में बलाघातात्मक स्वर प्रयोग ने ले लिया।

(10) वैदिक संस्कृत में उपसर्ग अपनी स्वतन्त्रता भी रखते थे, किन्तु लौकिक संस्कृत में वे अनिवार्यतः शब्दों के पूर्व जोड़े जाने लगे।

(11) लौकिक संस्कृत में समासों की संख्या चार से बढ़कर छह हो गई। द्वन्द्व, कर्मधारय, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, अव्ययी और द्विगु समास हो गए।

(12) लौकिक संस्कृत में लुङ् लकार का बहुत कम प्रयोग हुआ है।

(13) लौकिक संस्कृत में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित का भेद नहीं मिलता।

(14) लौकिक संस्कृत में वर्णिक और मात्रिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रयोग मिलता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लौकिक संस्कृत का निरन्तर विकास हुआ है। 12 वीं सदी में इसे राजदरबारों की भाषा बनाया गया। विद्वानों ने संस्कृत में अनेक कोषों का निर्माण भी किया। इसका विकास करने में राजाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

15 वैदिक संस्कृत में सर्वनाम मिलते हैं, लौकिक संस्कृत में सर्वनाम लुप्त हो गए हैं।

Scanned with CamScanner